।। ओ३म्।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विश्वदेवो महाँ असि। सामवेद 1026

विश्वदेव परमात्मन् ! तू महान है।

O the Lord of the universe !
You are the Greatest of all.

वर्ष 36, अंक 32 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 01 जुलाई, 2013 से रविवार 07 जुलाई, 2013 तक

विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114

दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

उत्तराखण्ड में भीषण बाढ़ एवं भूसख्लन से काल का ग्रास बनें मृतकों की स्मृति मे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली समस्त आर्यसमाजों व संगठनों की ओर

शान्ति यज्ञ एवं प्रार्थना सभा संकल्प के साथ सम्पन्न

बाढ़ पीड़ितों की सहायता तन-मन-धन से सहयोग करने का लिया संकल्प

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दिल्ली के समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से उत्तराखण्ड में भीषण बाढ़ एवं भूसख्लन से काल का ग्रास बनें समस्त मृतकों की स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं प्रार्थना सभा 30 जून, 2013 को आर्यसमाज 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में सहयोग के संकल्प के साथ सम्पन्न हुई, शान्तियज्ञ आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली के धर्माचार्य डा. कर्णदेव शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ।

यज्ञ के यजमान दिल्ली सभा के मन्त्री श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता सपत्नीक थे तथा अन्य उपस्थित आर्यजनों ने भी उत्तराखण्ड में दिवंगत आत्माओं के शान्ति हेतु शान्तिकरण के मन्त्रों द्वारा आहुति दी। प्रार्थना सभा में पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल, उ. पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल, दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल, उ. पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के अधिकारियों तथा दिल्ली की आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए तथा दिल्ली की पीड़ितों की सहायतार्थ हर सम्भव सहयोग का आश्वासन दिया।

उत्तराखण्ड में आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं द्वारा राहत कार्य जारी

उजड़ चुके गाँवों को क्षमतानुसार पुनः बसाने का प्रयास किया जाएगा – आचार्य बलदेव

दिल्ली सहित सारे देश एवं विदेशों में भी श्रद्धांजलि दी गई त्रासदी में मृतकों को

कार्यकर्ताओं की टीमें पिथौरागढ़, रुद्रप्रयाग एवं गुप्तकाशी में राहत कार्यों में जुटी : वितरण एवं सर्वेक्षण का कार्य जारी

प्रभावित गांवों घर-घर जाकर आवश्यकताओं की जानकारी लेते आर्यकार्यकर्ता

घर से बेघर हो चुके परिवारों को वस्त्र और खाद्य समग्री का वितरण

सार्वदेशिक सभा के निर्देश पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्यसमाज की युवा ईकाई के माध्यम से उत्तराखण्ड में महाप्रलय से त्रस्त भूखे–प्यासे लोगों को राहत पहुंचाने के लिए कार्यकर्ताओं की टीम उत्तराखण्ड में कार्य कर रही है। इसी शृंखला में आर्य कार्यकर्ताओं तीसरी टीम भी राहत सामग्री के साथ उत्तराखण्ड के लिए रवाना हो गई है।

पहली टीम शनिवार, 22 जून 2013 को पवन आर्य, हर्ष आर्य, मनीष आर्य और रोहित आर्य इन चारों आर्यवीरों की टीम हरिद्वार–ऋषिकेष होते हुए गोचर के लिये रवाना हुई।

दूसरी टीम सोमवार, 24 जून 2013 (प्रातः) 7 आर्यवीरों की टीम कोटद्वार, पूरी के लिये रवाना हो गई लेकिन वातावरण कुछ ठीक न होने के कारण ये टीम पिथौरागढ़ पहुँचीं।

शेष पृष्ठ 4 पर...

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्य एवं आर्य सभा मॉरिशस के अधिकारी

श्री राजन मोहित दिवंगत

वेद-स्वाध्याय

मानसिक चिन्ता मुझे खाये जा रही है

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

मूषो न शिशना व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं ते शतक्रतो। सकृत्सु नो मघवत्रिन्द्र मूळयाधा पितेव नो भव।। ऋ.10।। 33। 3।।

अर्थ – हे (शतक्रतो) ज्ञानवान् परमेश्वर। (ते स्तोतारम्) आपके उपासक मुझ को (मा आध्यः) मानसिक वासना, व्याधियाँ, कामना (वि अदन्ति) खाये जा रही हैं (मूषः न शिश्ना) जैसे चूहा रस में भीगे सूत या अपने अंग को खा जाता है। हे (इन्द्र) इन्द्र (मघवन्) ऐश्वर्यो के स्वामिन्। (नः) हमें (सकृत सुमृळय) सर्वथा सुखी कीजिये (अधा) और (नः) हमारे (पितेव) पिता के समान (भव) हूजिये।

व्याधि, आधि,समाधि ये शरीर एवं मन की तीन अवस्थायें हैं। रस–धातुओं की विषमता को व्याधि कहते हैं रोगस्तु दोषवैषम्यं दोष साम्यचारोगता वात–पित्त–कफ का विकृत हो जाना रोग और इनका समत्व आरोग्य है।

आधि – आधीयते मनो यस्मिन् जिसमें मन किसी वस्तु की आकांक्षा या इच्छा अथवा अप्राप्त होने पर द्वेष में उलझ जाये उसे आधि कहते हैं। यह मानसिक रोग है।

समाधि – आत्मा परमात्मा की समतावस्था या मन की एकाग्रता को समाधि कहते हैं। स्वस्थ मन में सत्त्वगुण की प्रधानता होती है। जब रजो गुण और तमोगुण की वृद्धि हो जाती है तो काम–क्रोधादि विकार उत्पन्न होकर मन को अस्वस्थ बना देते हैं। मल, विक्षेप, आवरण, ये तीन मन के दोष हैं।

1.मल– काम,क्रोध,लोभ,मोह, मद मात्सर्यादि।

2.विक्षेप – व्याधि, रत्यान, संशयादि।

3. अविद्या, अविवेक, अज्ञान, तमोगुण की वृद्धि आदि।

सात्विक मन के लक्षण – दयालुता, परस्पर बांटकर वस्तुओं का उपभोग करना, सहनशीलता, सत्यभाषण, धर्माचरण, आस्तिक भाव, ज्ञान– बुद्धि मेधा से सम्पन्न, धैर्य, स्मुति, विषय भोगों में अनासक्ति होना। सात्विक मन स्वभावतः ही निर्दोष तथा विकार रहित होता है। मन के दो अन्य प्रकार स्वभावतः ही विकृति वाले होते हैं।

राजसिक मन के लक्षण – निरन्तर दुःखी रहना, असन्तोष, किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये निरन्तर भ्रमण या प्रयत्न करना, धैर्य का अभाव, अहंकार, असत्यभाषण, क्रूरता, दम्भ, गर्व, आनन्द की इच्छा, काम तथा क्रोधादि राजकि मन के लक्षण हैं।

तामसिक मन के लक्षण – अत्यधिक निराशा, नास्तिक, बुद्धि, अधर्म का आचरण, मन्दबुद्धिता, आत्मविषयक अज्ञान, अपकार अर्थात् बदला लेने की भावना, पापवृत्ति, अन्याय में प्रवृत्ति और निद्रादि तामसिक मन के लक्षण हैं।

मानसिक रोगों में रजोगुण और तमोगुण की वृद्धि से जो विकार उत्पन्न होते हैं उन्हें संक्षेप में दो वर्गी में विभक्त किया जा सकता हैं। 1. इच्छा 2. द्वेष

किसी पदार्थ की अत्याधिक कामना को इच्छा और पदार्थ विशेष के प्रति रुचि न होना द्वेष कहलाता है।

रजोगुण और तमोगुण से आच्छादित मन में विषयों को भोगने की तीव्र इच्छा उत्पन्न होती है। जब उसकी पूर्ति नहीं होती या बीच में कोई व्यवधान आ जाये जब क्रोध से संमोह, स्मृति भ्रंश, बुद्धिनाश और बुद्धिनाश हो जाने से पुरुष अपनी स्थिति से गिर जाता हैं।

बुद्धि के भ्रष्ट होने पर व्यक्ति अहित आहार–विहार का सेवन करने लगता है जिसके कारण वात आदि दोष कुपित होकर अनेक मनोकायिक और मानसिक रोगों की उत्पत्ति होती है। मन्त्र में इसी स्थिति का वर्णन किया है – मूषो न शिश्ना व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं ते शतक्रतो हे परमेश्वर ।तेरे उपासक मुझको मानसिक चिन्तायें वासनायें खाये जा रही हैं जैसे कि अन्न या रस में भीगे हुये कच्चे धागे अथवा अपने प्रजननांग को चूहे खा जाते हैं इसी भाँति चिन्ताओं से घिरा हुआ मैं व्यथित हो रहा हूँ। मैं हर समय अनिष्ट या अनहोनी के विषय में सोचता रहता हूँ। मैं असुरक्षा की भावना, अविश्वास, काल्पनिक भय का अनुभव कर रहा हूँ। मेरी निद्रा चली गई है। छाती की धड़कन बढ़ गई। भूख लगती ही नहीं है। दिल घबरा रहा है और शरीर में उत्साह ही समाप्त हो गया है।

हे प्रभो। पितेव नो भव आप मेरे पिता के समान हैं अतः मुझे सकृत सुनो मघवनिन्द्र मृलया मुझे सर्वथा सुखी कीजिये। मानसिक व्याधि से ग्रस्त व्यक्ति को आचार्य चरक समझाते हैं और सान्तवना देते हुये कहते हैं अरे भोले। जिससे तू प्रार्थना कर रहा है, उसने तो जीने और दुःखों से छूटने का मार्ग ऋषियों को बता दिया है अब तुम्हें उन्हीं की शरण में जाना चाहिये। देख इन मानसिक रोगों को दूर करने का उपाय क्या है –

योगे मोक्षे च सर्वासां वेद नानामवर्तनम्। मोक्षे निवृतिर्नि:शेषा योगो मोक्ष प्रवर्तकः।। चरक शरीर 1. 137।।

योग और मोक्ष में सभी दुःखों या वेदनाओं का नाश हो जाता है। मोक्ष में तो इन वासनाओं का मूल ही उच्छेद हो जाता है। इस मोक्ष को योग साधना से प्राप्त करते हैं। चित्त की वृत्ति का निरोध करना ही तो योग है।

योग के अभ्यास से तुझे अलौकिक सिद्धियों की प्राप्ति होगी और फिर इन लौकिक ऐश्वर्यो की इच्छा ही समाप्त हो जायेगी।

मोक्षो रजस्तमोऽभावात् बलवत् कर्म संक्षयात्। वियोगः सर्वसंयोगैरपुनर्भव उच्यते।। च.शा. 1.142 ।।

मन से जब रज और तम दूर हो जाते हैं और बलवान् कर्मो का क्षय हो जाता है तब दग्ध बीज हुये कर्म पुरुष को बन्धन में नहीं डालते। इसे ही मोक्ष कहते हैं जिसमें जन्म–मरण का चक्र छूट जाये।

इस योग साधना को सीखने के लिये तुम्हे समित्पाणि हो क्षोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ गुरु की शरण में जाना होगा अथवा सर्वात्मना ईश्वर का शरणागत होना होगा तभी हृदयस्थ अविद्या, जो सब दुःखों का कारण है, उसकी ग्रन्धि कट पायेगी।

– क्रमशः

"शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर"
"सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो"

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों सहायतार्थ दान की अपील पर प्राप्त दान की सूची

गतांक से आगे –

27	श्री अनन्तशरन जिंदल	500
28	कु. प्रियंका एवं अनुराग अग्रवाल	251
29	श्री गौरव आर्य	2200
30	श्री सोमदेव मल्होत्रा	1100
31	श्री ईश्वरचन्द अरोड़ा	500
32	श्री हंसराज वर्मा	1100
	पौराणिक पोल प्रकाश के सहयोग से प्राप्त	
33	श्री सन्दीप कुमार	2000
34	श्री वीरेन्द्र कुमार बंसल	2000
35	श्री विनोद कुमार	5000
36	श्री किशोर कुमार कौल	10000
37	श्री सुनीत कुमार	1000
38	श्री भारती शर्मा	1000
39	श्री दुर्गा प्रसाद पारासर	500
40	श्री अशोक आर्य	500
41	श्री अभय सूद	5000
42	श्री महेश मदान	21000
43	श्री विवेक जिन्दल द्वारा एकत्र	16300
44	आर्य समाज धूरी (पंजाब)	11000
45	आर्य कन्या कॉलेज धूरी (पंजा)	11000
46	श्री रामप्रकाश शर्मा	20000
47	श्री योगेश मित्तल	5100
48	श्रीमती सुशीलादेवी आर्य	5000
49	श्री गौरव आर्य	2000
50	श्री विश्वामित्र आर्य	1100
51	श्री रवि सोनी	1000
52	श्री ललित सोलंकी	500
53	श्री लक्ष्मण शर्मा	7000
54	श्री विवेक जिन्दल आर्य	2100
55	श्री चन्द्रेश मित्तल	2100
56	श्री उदय कुमार भट्ट	1100
57	श्री मयंक सिंहल	1000
58	श्री राकेश चावला	500
59	श्री प्रह्लाद आर्य, प्रधान आ.स. धूरी	2100
60	**श्री अरुण कांगले, बैंग्लोर**	5000
61	आर्यसमाज कीर्ति नगर	51000
62	श्रीमती शकुन्तला सेतिया	5000
63	श्री रामेश्वर नाथ गुप्ता	2100
64	श्री विद्यासागर गर्ग	20000
65	श्रीमती कृष्णा सेठी	1000
66	श्रीमती उषा यादव–सहयोगी	2500
67	आर्यसमाज मस्जिद मोठ	5100

– क्रमशः

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे।

– विनय आर्य, महामन्त्री

आवश्यकता है।

अध्यापक की आवश्यकता

श्रीमद् दयानन्द आर्ष गुरुकुल खेड़ा – खुर्द दिल्ली – 82 में कक्षा 5 वी से लेकर 12 वी तक की कक्षाओं को गणित विज्ञान और अंग्रेजी पढ़ाने हेतु योग्य एवं गुरुकुलीय वातावरण में रहने के इच्छुक अध्यापकों की आवश्यकता है।

सुविधा – वेतन के साथ भोजन, दूध, वस्त्र आदि।

इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करें। – ***आचार्य सुधांशु, 9350538952***

हिन्दी टाईपिस्ट, स्टैनो एवं वाहन चालक की आवश्यकता

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा हेतु एक हिन्दी स्टैनो टाईपिस्ट की आवश्यकता है जो डी.टी.पी. का कार्य भी जानता हो। कार्यालय हेतु एक वाहन चालक की भी आवश्यकता है जिसके पास हल्का मोटर वाहन चलाने का व्यवसायिक लाईसेन्स होना आवश्यक है। पश्चिमी दिल्ली निवासी को प्रथमिकता दी जाएगी। **इच्छुक उम्मीदवार सम्पर्क करें –** ***श्री विनय आर्य, (मो. 9650182727)***

विशेष सूचना : *दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली द्वारा संचालित वेद प्रचार वाहन पर नियुक्त भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य को सभा ने तत्काल प्रभाव से दिनांक 1 जुलाई 2013 से सेवामुक्त कर दिया है। भविष्य में कोई भी आर्यसमाज अपने जोखिम पर ही कार्यक्रम उन्हें दे एवं सभा हेतु कोई लेनदेन ना करें –* ***विनय आर्य, महामन्त्री***

मोक्ष प्राप्ति का सोपान – वैदिक आश्रम व्यवस्था

– मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

मोक्ष प्राप्ति यदि हमारा गन्तव्य है तो उस तक पहुचंने का सरल सोपान आश्रम व्यवस्था है। तार्किक रूप से लक्ष्य, गंतव्य और सोपान में एक गहरा सम्बन्ध होता है। सोपान यदि ऋजु है, सरल है तथा सीधा है, तो पथिक को वहां तक पहुँचने में कोई कठिनाई नहीं होती। हाँ गंतव्य या लक्ष्य तक पहुँचने के लिए तप की आवश्यकता होती है। तप और श्रम का आधार 'सहोऽसि सहो मयि देहि' है। जीवन के चारों आश्रम तपस्थली है, इसलिए इन्हें धार्मिक भाषा में सोपान सरल, सीधे पान, पायदान कहा है।

मनुष्य की एक मात्रा इच्छा और आकांक्षा को व्यक्त करने वाला यह सुप्रसिद्ध मन्त्र इस प्रकार है:–

त्रयम्बंक यमामहे सुगन्धिम पुष्टि वर्धनम्। ऊर्वारूर्कामव बन्धनामृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

ऋग्वेद 7/57/12, यजुर्वेद 3160

एक सच्चा आस्तिक अपनी आन्तरिक इच्छा प्रकट करते हुए कहता है–आओं! उस त्रयम्बक प्रभु का भजन करें–उसकी पूजा–अर्चना करें जिससे हम भी मृत्यु–बंधन से वैसे ही छूट, सकें जैसे पका हुआ खरबूजा अपनी बेल या डाली से स्वतः छूट जाता है, उसे जबरदस्ती छुड़ाना नहीं पड़ता, किन्तु उसके बेल से छूटते ही चारों और सुगंध और पुष्टि फैल जाती है। कहा जाता है कि जब मृत्युजंयी कालजित पुरुष संसार की डाल से छूटते हैं, तब उनकी स्थिति ऐसी होती है।

इस विश्व को तस्थुष अर्थात् जगत कहा है। जगत का अर्थ चलायमान, गतिशील परिवर्तनशील होता है। कल–कल करता हुआ समय कल फिर नहीं आता। इस कल–कल में ही सारा संसार विद्यमान है। एक बार एक जिज्ञासु ने ऋषिवर दयानन्द से पूछा–"परमात्मा को बैठे–बिठाए इस संसार की रचना क्यों सूझी? व्यर्थ में उसने यह झंझट अपने सिर पर ले लिया।"

इस प्रश्न को सुनकर पहले तो ऋषिवर थोड़ा मुस्कुराये और फिर उस प्रश्नकर्ता को सीधे शब्दों में यह उत्तर दिया– "परमात्मा का एक गुण न्यायकारी है। प्रत्येक जीव को उसके कर्मों का फल उसे देना है। प्रलय के पश्चात् यदि सृष्टि नहीं रची जाती तो जीव को सृष्टि के प्रलय के पूर्व किये हुए कर्मों का फल किस प्रकार प्राप्त होता? गुण और गुणी का सम्बंध अविच्छेद्य होता है। यह क्रमशः सदा से होता आया है, वर्तमान में हो रहा है और भविष्य में सदैव होता रहेगा। यह सब सृष्टि के अनुसार ही होता आया है, इसीलिए यह स्वाभाविक है। प्रकृति तो उपादान कारण है। मानव को मोक्ष प्राप्ति के लिए परमात्मा ने प्रकृति के विकृत कर पंचभूतों तथा तन्नमात्र्ााओं सहित यह शरीर प्रदान किया है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है।

क्षिति, जल, पावक, गगन समीरा।
पंचतत्व रचा यह महा शरीरा।।

पौराणिक काल में कुछ हीनता ग्रह्य कवियों ने महा के स्थान पर अधम कहकर इस शरीर को निम्न कोटि का बना दिया है। जबकि यह मोक्ष प्राप्ति का सुन्दर साधन है। वैदिक भाषा में इस शरीर को, कंचन काया कहा है। ***'शरीर माद्यं खलु धर्म साधनम्'*** कहकर शरीर की प्रतिष्ठा की गई है।

भारतीय मनीषियों ने जन्म काल से शत्वर्षीय जीवन को कुल चार भागों में विभाजित या व्यवस्थित किया है। इनमें से प्रत्येक जीवन खंड को सुन्दर नाम देकर उसके साथ एक सुन्दर प्रत्यय लगा कर उस शब्द को गरिमा मय बना दिया है। यथा ब्रह्मचर्याश्रम, ग्रहस्थाश्रम, वानप्रस्थ आश्रम तथा सन्यास आश्रम। इन चारों विभागों में एक सुन्दर प्रत्यय वैदिक दर्शन की ओर ध्यान दिला रहा है। जीवन के प्रारम्भ से लेकर मृत्यु पर्यन्त मनुष्य को श्रम ही श्रम करना है। लेकिन संस्कृत में जिसे श्रम कहते हैं,

वैदिक संस्कृत में उसे 'तप' कहते हैं। यह ध्यान रखने की बात है कि तप' का विपरीत शब्द 'पत' है जिसका अर्थ पतन गिरावट होता है। पत से बचने के लिए तप करना ही अभीष्ट है। इसी तप की गरिमा, मनुष्य जीवन का उद्देश्य जन्म के पूर्व के संस्कार माता–पिता के संस्कार आदि के परिमार्जन हेतु भारतीय मनीषियों ने संस्कार की व्यवस्था की है। इसी लिए महर्षि दयानन्द ने संस्कार–विधि में प्रथमतः बहुत ही सुन्दर एक वाक्य लिखा है – ***'वेदानुकूलै गर्भाधानद्यन्त्येष्टि पर्यन्तैः षोडश संस्कारः समन्वितः'*** अर्थात् गर्भाधान संस्कार से लेकर अन्त्येष्टि संस्कार तक सम्पन्न करने वाली विधा को यहाँ वेदानुकूल पद्धति से समन्वित स्वीकृत किया है। ऋषिवर दयानन्द की यह मान्यता अंकित करने योग्य है कि – बालक का मन–मस्तिष्क कभी भी कोरा पृष्ठ या कोरी–स्लेट नहीं होता। अपितु गर्भ में आनेवाला जीव अपने सूक्ष्म–शरीर के साथ अपने पूर्वजन्म के संस्कार भी लेकर आ रहा हैं, अतएव उनका परिमार्जन करना नितान्त आवश्यक है। यदि वे संस्कार श्रेष्ठ हैं, तो वे यहां श्रेष्ठतम हो जायेगें। यदि निकृष्ट अथवा अति निकृष्ट हुए तो उनका परिष्कार त्याग। इस दुस्सह कार्य के लिए 'श्रम' तप करना आवश्यक होगा।

मेरे पूज्य गुरुजी पंडित वीरसेनजी वेदश्रमी, से मैंने एक दिन श्री चरणों में अपना मस्तक झुकाकर विनम्रतापूर्वक यह प्रश्न किया– आपने–अपने उपारूप में वेदश्रमी शब्द का ही चयन क्यों किया? यह प्रश्न सुनकर वेदविद्यावारिधि गुरुजी ने जो उत्तर दिया, वह संसार के समस्त वेद भक्तों को सदैव स्मरण रखने योग्य है।

उन्होंने कहा– मनु, श्रम तो सभी करते हैं। श्रम और तप के भी कई भेद–प्रभेद हैं, परन्तु जो जिज्ञासु वेद रूपी समुद्र से सुन्दर मणियाँ कांचन और अमृत ढूंढ लाते हैं, अथवा संलग्न रहते हैं, वे ही वेदश्रमी कहलाते हैं। जब श्रम करना ही अभीष्ट है, तो फिर परमात्मा द्वारा प्रदत्त ज्ञान प्राप्त करने में ही श्रम क्यों न किया जाए और जीवन को क्यों न सफल बनाया जाए। पूज्य गुरुजी के ये अटल वचन सुनकर मैं भाव–विभोर हो गया। धन्य हैं वेदश्रमी जी।

प्रथम सोपान– इस उद्धरण को प्रस्तुत करने का एक उद्देश्य यही है कि श्रम ही जीवन है और जीवन का दूसरा पर्यायवाची शब्द श्रम है। अतएव मोक्ष की अभिलाषा रखने वाले उस जीव को जिसने यह शरीर धारण कर अपनी यात्रा प्रारम्भ की है, तब उसका प्रथम पड़ाव ब्रह्मचर्याश्रम ही है।

ब्रह्मचर्य का अर्थ केवल यौन सम्बन्धों पर वैचारिक या ऐच्छिक नियन्त्रण ही नहीं होता। यह तो जीवनशाला की प्रथम कक्षा है। यहां ब्रह्म शब्द का अर्थ परमात्मा, वेद विद्या, सत्य, अध्यात्म लक्ष्य प्राप्ति का उद्देश्य भी है। अर्थात् अवस्था के अनुसार सभी पुरुषों को अपने रज–वीर्य की रक्षा करते हुए श्रम और तप के माध्यम से सत्य और ईश्वर तक पहुँचने का प्रयास करना है। योगिराज श्रीकृष्ण के साथ महर्षि दयानन्द ने एक ऋतुगामी सदग्रहस्थ को भी ब्रह्मचारी कहा है। यह ब्रह्मचर्यव्रत, ईश्वर, सत्य और मोक्ष प्राप्ति का लक्ष्य तो आगामी ग्रहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम तथा संन्यासश्रम की अवधि समप्ति तक समय सतत् चलता रहता है। इसलिए मोक्ष–प्राप्ति का प्रथम सरल, सुन्दर और सीधा सोपान ब्रह्मचर्याश्रम है। यही से जीवन यात्र्ाा का शुभारम्भ होता है।

द्वितीय सोपान– ग्रहस्थाश्रम मनुर्भव जनया दैव्यम् जनम (ऋ. 10/4316), गृहा मा विभीत (यजु0 3/49), तथा अधोरचक्षुर–पतिधन्येधि शिवा पशुभ्य सुमनाः सुवर्चा (ऋ 10/85/44) तथा आचार्य मनु ने– 'यथा वायुं समाश्रित्य वर्तन्ते सर्व जन्तवः।' तथा 'ग्रहस्थाशत्य वर्तन्ते सर्व आश्रमः' (मनु0 3177), अर्थात् जैसे वायु आश्रय से सब जीवों का वर्तमान सिद्ध होता है। वैसे ही ग्रहस्थ के आश्रम से ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और संन्यासी अर्थात् सभी आश्रमों का निर्वाह होता है।

इस प्रकार ऋषि–मुनियों ने मानवीय आधार–शास्त्रों के आधार पर धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष, की प्राप्ति का यह सरल और सुखद आश्रम, ग्रहस्थाश्रम की व्यवस्था की है। कौन कहता है कि आर्यों का ग्रहस्थाश्रम, मोक्ष प्राप्ति में बड़ा बाधक होता है? वेद में ग्रहस्थाश्रम को मोक्ष का बड़ा साधक कहा है।

वैदिक आश्रम व्यवस्था 'लिंग–निरपेक्ष' है, इसकी यही एक मात्र विशेषता है। प्रत्येक ब्रह्मचारी को ग्रहस्थाश्रम में प्रवेश करना अनिवार्य नहीं है। ग्रहस्थाश्रम में प्रवेश हेतु निषिद्ध घोषित करने के कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु निश्चित किये गये हैं। नैष्ठिक ब्रह्मचर्य–व्रत धारण करना यह पात्रा पर निर्भर है। किन्तु गुण–कर्म–स्वभाव के विपरीत विवाह करने की अपेक्षा आजीवन एकांगी जीवन व्यतीत करना श्रेयस्कर माना गया है। यह एक स्वर्णिम सिद्धांत है। मोक्ष प्राप्ति में ग्रहस्थाश्रम को बाधक नहीं सहायक माना गया है। हमारे यहाँ ऋषि तथा आदर्श पुरुष श्रेष्ठ ग्रहस्थाश्रमी थे यथा–

मर्यादापुरुष राम, योगिराज श्रीकृष्ण, जनक, याज्ञवल्क्य, नारद, भारद्वाज, गुरु नानक, कबीर, महात्मा गांधी, म0 मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द), वीर सावरकर, म0 आनन्द स्वामी, पंडित लेखराम, महामना मालवीय जी, सत्य प्रकाश जी, –प्रभृति। ये सभी महान आत्मायें ग्रहस्थाश्रम में रहकर मोक्षगामी हुए हैं। इसके अतिरिक्त अनेक ऋषिकाएं भी सफल गृहस्थ हुई हैं। इसलिए हमारा कथन बिल्कुल सत्य है कि मोक्ष प्राप्ति का पूर्ण अधिकार योग्य स्त्री–पुरुषों को है। इसमें देश काल, स्थान का तनिक भी भेदभाव नहीं है। यहीं कारण है कि मनुस्मृति में ग्रहस्थाश्रम की उपमा वायु, प्राणवायु से की गई है। वैदिक समाज व्यवस्था ऐसी ही अनेक विशेषताओं से भरा पड़ा है।

तृतीय सोपान–वानप्रस्थाश्रम द्विपानों तक की जीवन यात्रा अनेक गुण विद्यायें, ज्ञान और अनुभव से पूर्व पूर्ण हो गई है। इन्हें ***'शत् हस्त समाहर सहस्र हस्त संकिरः।'*** वेद के इस आदेशानुसार मोक्षोन्मुख व्यक्ति समाज को अपना सब कुछ समर्पित करने को उद्यत है, परन्तु कर्म के पूर्व कुछ और चिन्तनकर अध्यात्म की सूक्ष्म पहेलियों में चिन्तन करना चाहता है। अब वह मौन धारण कर मुनि प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने के लिए अन्तमुर्खी बनकर आत्मा का विकास करना चाहता है। सांसारिक दायित्व से सर्वथा निवृत्त होकर मुनि अवस्था को स्वीकार कर श्रम और तप द्वारा कुछ श्रेष्ठ निखारना चाहता है। लक्ष्य तो वही है। जीवन का दूसरा पड़ाव भी महत्वपूर्ण है। अर्न्तमुखी साधना सफलता की एक सीढ़ी है। सम्प्रति यदि वन–गमन का स्थान न हो तो घर पर ही रहकर एकान्त मन से अपने विचारों का परिष्कार कर तप और साधना स्वाध्याय करें।

चतुर्थ सोपान– ***'इदम मम'*** से ऊंचे उठकर ***'इदं न मम्'*** के परिवेश में प्रवेश अवस्था का नाम संन्यासाश्रम है। संन्यास–विन्यास का रूपान्तर है। मोक्ष अभिमुखी अब अपने ग्रह, ग्राम, नगर, प्रान्त और देश से भी ऊंचा उठकर विश्व–नीड़ के वासी बनने जा रहा है। ***'इदम् सर्वम् समर्पयामि'***–मानवता के कल्याण के लिए उसने विश्व नागरिकता स्वीकार कर प्राणिमात्रा की सेवा ओ3म ध्वज के रंग का आवरण स्वीकार कर लिया है। ओ3म् ध्वज के समान पंथ निरपेक्ष बनकर वह भी विश्व साक्षेप बनकर कल्याण मार्ग का सूचक बन गया है। ऐसा चतुर्थाश्रम पूरा मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकेगा? हां ! अवश्य।

– 'सुकिरण' अ/13, सुदामा नगर, इन्दौर (म0प्र0) – 452009

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की आर्य विद्या परिषद दिल्ली की ओर से

दिल्ली के आर्य विद्यालयों के शिक्षक वर्ग हेतु कार्यशालाएं सम्पन्न

वैदिक विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार ने किया सम्बोधित

आर्य विद्या परिषद दिल्ली द्वारा आयोजित दिल्ली के आर्य विद्यालयों के शिक्षक वर्ग के लिए कार्यशालाओं एवं गोष्ठीयों का आयोजन पूर्वी दिल्ली में दयानन्द मॉडल स्कूल एवं विवेक विहार,मध्य दिल्ली में रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल राजा बाजार, कॅनाट प्लेस, दक्षिणी दिल्ली में दयानन्द मॉडल स्कूल, पश्चिमी पटेल नगर में आयोजित की गई इन कार्यशालाओं में आर्य विद्या परिषद के अध्यक्ष ब्र. राजसिंह आर्य जी, प्रस्तोता श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य व डा. महेश विद्यालंकार जी ने अपने वक्तव्यों में बडे ही सरल व साधारण भाषा में शिक्षक व शिक्षिकाओं को ईश्वर, जीव प्रकृति के स्वरूप को विस्तार से बताते हुए आज के परिवेश में शिक्षकों के दायित्व उनकी भूमिका, उनकी कार्यशैली पर चर्चा की। इन कार्यशालाओं में मुख्य वक्ता वैदिक विद्वान व शिक्षाविद डा. महेश विद्यालंकार जी ने शिक्षकों को विद्यार्थियों का निर्माता बताते हुए उन्हें अपने दायित्वों का कर्त्तव्यनिष्ठा व ईमानदारी से निर्वाह करने पर बल दिया।

श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी ने इस कार्यशालाओं में शिक्षकों को उनके व्यक्तित्व के विकास, अपने ज्ञान व कला कौशल की वृद्धि, कक्षाओं में अनुशासन पालन, बच्चों के बौद्धिक स्तर के विकास हेतु बहुत ही उपयोगी बातें बताई।

इस कार्यशालाओं में सभी आर्य विद्यालयों के शिक्षक वर्ग उपस्थित रहे। विद्यालयों के अधिकारियों व अध्यापकों ने इन एकदिवसीय कार्यशालाओं के आयोजन पर आर्य विद्या परिषद् के अधिकारियों का धन्यवाद किया और भविष्य में इन कार्यशालाओं के निरन्तर आयोजन के लिए निवेदन किया है।

इस आयोजन पर श्रीमती तृप्ता शर्मा – विभिन्न– विभिन्न अध्यापक/अध्यापिकाओं ने विचार व्यक्त किये। श्रीमती वीना वशिष्ठ (कार्याकारी प्रधानाचार्या, रघुमल आर्य कन्या सी.सै. स्कूल, राजा बाजार) – इन कार्यशालाओं का आयोजन समय–समय पर होना चाहिए। इनके माध्यम से अध्यापिकाओं को अपने अन्दर छिपी प्रतिमा को परखने का मौका मिलता है।

श्रीमती सीमा भाटिया,

(प्रधानाचार्या, दयानन्द मॉडल स्कूल, विवेक विहार) – मैं आर्य विद्या परिषद के अधिकारियों का धन्यवाद करती हूँ इन कार्यशालाओं के आयोजन के लिए। इस आयोजन से अध्यापिकाओं के व्यक्तित्व के विकास एवं उनकी कार्यशैली में अवश्य ही ये कार्यशालाएँ महत्वपूर्ण रहेगी।

श्रीमती अंजना लुथरा,

(प्रधानाचार्या, दयानन्द मॉडल स्कूल पश्चिमी पटेल नगर) – अध्यापिकाओं को समय–समय पर ऐसे विचार मिलते रहे, तो वे अपने दायित्वों के प्रति जागरुक रहेगी।

श्रीमती इन्दिरा छाबड़ा,

(प्रधानाचार्या, महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, मोती नगर) – इन कार्यशालाओं में बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला। इन कार्यशालाओं में बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला। इनका आयोजन अध्यापिकाओं को लाभकारी रहेगा।

श्रीमती प्रेमिला सिंह,

(प्रधानाचार्या, आर्य मॉडल स्कूल, आदर्श नगर) – अध्यापक की भूमिका बेशक विद्यार्थी के जीवन निर्माण की होती है लेकिन मनुष्य उम्र भर विद्यार्थी ही रहता है। आर्य विद्या परिषद् के माध्यम से विद्ववानों व शिक्षाविदों के द्वारा उचित मार्गदर्शन सदैव हमारे लिए प्रेरणादायक रहेगा।

श्रीमती नमिता पालित,

(प्रधानाचार्या, रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल) – ऐसा अवसर पहली बार प्राप्त हुआ इस आयोजन में हमने जाना अपनी शिक्षण शैली को वर्तमान में किस प्रकार अधिक प्रभाव शाली बनाया जा सकता है। सभी अध्यापिकाओं के लिए ये कार्यशालाएं ज्ञानवर्धक रही।

श्रीमती शशि बाला,

(प्रधानाचार्या, लालीबाई प्राइमरी स्कूल, गोविन्द भवन, रामबाग) – आर्य विद्या परिषद् द्वारा आयोजित इन कार्यशालाओं के लिए अधिकारियों का धन्यवाद करती हूँ। और निवेदन करती हूँ कि इस प्रकार की कार्यशालाओं का आयोजन समय–समय पर अवश्य होना चाहिए।

श्रीमती नीरज मेंहदीरत्ता,

(प्रधानाचार्या,म.द.आ.प.स्कूल शादीपुर) – इन कार्यशालाओं से वर्तमान परिवेश में शिक्षा के दोड में कार्य करने में हमें निश्चित रूप से सहायता मिलेगी। ये कार्यशालाएँ बार–बार होनी चाहिए।

उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ तन–मन–धन से सहयोग करे आर्यजन

दानी सज्जन/संस्थाएं अपनी दान राशि निम्न बैंक खातों में जमा कराएं

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' – खाता सं. 09481000000276
पंजाब एंड सिंध बैंक, IFSC - PSIB 0020948 MICR - 110023121

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' – खाता सं. 1098101000777
केनरा बैंक, IFSC - CNRB 0001098 MICR - 110015025

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010008984897
एक्सिज बैंक, IFSC - UTIB000223 MICR - 110211025

विशेष : जो सज्जन/संस्थाएं अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं वे अपनी राशि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम सभा उपरोक्त बैंक खाते में जमा कराएं। कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल 9540040339 पर श्री विजय आर्य को सूचित करें तथा aryasabha@yahoo.com पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें ताकि उन्हें रसीद भेजी जा सके – ***विनय आर्य, महामन्त्री***

विशेष सूचना

दिनांक 29 जून को एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग में सम्पन्न हुई कार्यशाला की रिपोर्ट अगले अंक में प्रस्तुत की जाएगी।

– सरोज यादव, संयोजिका

प्रथम पृष्ठ का शेष

उत्तराखण्ड में आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं द्वारा राहत कार्य.....

तीसरी टीम सोमवार, 24 जून 2013 (सायं.) 40 आर्यवीरों की टीम पिथौरागढ, खुरादाबाद एवं रुद्रपुर के लिये रवाना हो गई। वहाँ के 60 गाँव तबाह हो गए हैं। रास्ते में चम्पावत में अमर उजाला और दैनिक जागरण की टीम ने इनका स्वागत किया तथा बताया कि इस तरफ जाने वाली राहत की पहली गाड़ियाँ है। इससे पहले इस ओर कोई भी राहत नहीं पहुँची। पिथौरागढ से लगभग 95 किलोमीटर आगे के गाँवों मे जिसमें की घारचुला, ब्रह्म तथा अनेक अन्य गाँवों में जाकर अलग–अलग टीमों के माध्यम से राहत सामग्री का वितरण कर रही है।

इस कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व हमारी एक टीम स्कॉरपियो कार से निरक्षण हेतु 5 आर्य वीरों की निकली यह पता लगाने की हम कहाँ आधार शिविर स्थापित करें। और उनका उत्तर आते ही गाड़ियाँ दिल्ली से निकाल भेज दी गई। आधार शिविर दयानन्द इंटर कॉलेज पिथौरागढ में लगा दिया गया।

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश की टीम "धारचुला" में कोठी जहाँ आई टी बी पी का कैंप पूरा तबाह हो गया था वहाँ पर राहत समाग्री लेकर पिथौरागढ़ से रवाना हुई। लगभग 60 किलोमीटर गाड़ियों द्वारा तथा उसके बाद 15 किलोमीटर पैदल चलकर वहाँ पहुँचे। सारी राहत सामग्री व्यवस्थित तरीके से बाँटकर कार्यकर्ता रात 11.30 बजे वापस अपने कैंप लौटे। रास्ते में नयी बस्ती में इनको नैनीताल की विधायक श्रीमती शारदा आर्य मिली तथा उन्होंने इनके कार्य की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

उत्तराखण्ड त्रासदी की मूक तस्वीरें तथा आर्य कार्यकर्ताओं द्वारा आरम्भ किए गए राहत कार्य

बाढ़ विभीषिका से त्रस्तजनों हेतु शान्ति यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज सरदार पटेल मार्ग, खलासी लाईन, सहारनपुर में उत्तराखण्ड तथा अन्य प्रदेशों में आयी बाढ़ आपदा में मारे गये लोगों को आत्मिक शान्ति हेतु पं. सोमदत्त आर्य जी पुरोहित में 23 जून 2013 को वृहद शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया।

वरिष्ठ आर्य सदस्य राजसिंह चौहान की अध्यक्षता में एक आपदा राहत– कोष स्थापित किया गया जिससे प्राप्त राहत सामग्री एवं कोष पीड़ित परिवारों को भेजा जायेगा। यज्ञ में क्षेत्र आर्यजनों तथा अन्य लोगों ने बढ़चढ़कर भाग लिया।

– रविकान्त राणा, उप मन्त्री

जयपुर में वैदिक यज्ञ सम्पन्न

जयपुर में वैदिक यज्ञ 8 जून को शनि – अमावस्या पर्व पर धर्मानुरागी जनता में जहाँ दानपुण्य की होड़ थी, तो प्रबुद्ध लोगों में वैदिक विधि से यज्ञायोजनों में रूचि। ऐसा ही यज्ञ सीनियर सिटिजन फोरम के अध्यक्ष के.एम. रामनानी ने मानसरोवर के डे केयर सेंटर भवन में रचाया। यज्ञ के मुख्य यजमान लोटस डेयरी ग्रुप के चेयरमैन डी.डी. वर्मा रहे।

यज्ञ की ब्रह्म–पीठ से व्याख्या करते हुए प्रसिद्ध समाज सेवी वैदिक (आर्य) प्रवक्ता यशपाल (यश) ने कहा कि ग्रह तो प्रकृति से जड़ है अतएवं इनसे अनिष्ट होने की आशंका आधार हीन है।

शुक्ल और कृष्ण पक्ष तो खगोलीय व्यवस्थाएँ हैं। यज्ञों के आयोजन से देवपूजा, संगतिकरण और दान के प्रयोजन सम्पनन होते हैं, जो अतः आत्मबल प्रदान करते हैं। यज्ञ में बड़ी संख्या में आर्यजनों उपस्थित होकर आहुतियाँ अर्पित की।

शोक समाचार

श्रीमती गिन्नी देवी शर्मा का निधन

आर्यसमाज सिलीगुड़ी के संस्थापक सदस्य श्री रतिराम शर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती गिन्नी देवी शर्मा का 85 वर्ष की आयु में 28 जून, 2013 को में निधन हो गया। उन्होंने सिलिगुड़ी तथा आसपास के क्षेत्र में आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में अपने पति का आगे बढ़कर सहयोग किया। वे अपने पीछे पति एवं चार पुत्र एवं चार पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

लाला दीवानचन्द ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री विश्वनाथ नहीं रहे

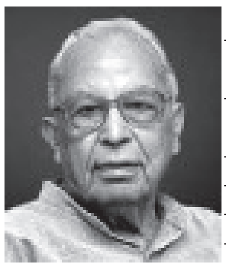

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध आर्यनेता महाशय राजपाल जी के सुपत्र श्री विश्वनाथ जी का गत दिनों 93 वर्ष की अवस्था निधन हो गया। आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध प्रकाशक राजपाल एंड संस के तथा आर्यसमाज की सहयोगी संस्था लाला दीवानचन्द ट्रस्ट के अध्यक्ष भी थे। वे डीएवी कॉलेज प्रबन्धकृर्त समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष भी रहे। हिन्दी साहित्य के अनेक लेखकों एवं कवियों से उनके मुधर सम्बन्ध रहे। वे राजपाल एजूकेशन ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष भी थे।

आर्य सभा मॉरिशस के सुप्रसिद्ध आर्य नेता

श्री राजन मोहित दिवंगत

अफ्रीका महाद्वीप के मॉरीशस गणराज्य में आर्यसमाज की नींव रखने वाले आर्य रत्न मोहनलाल मोहित के सुपुत्र एवं आर्य सभा मॉरीशस के अनेक पदों को सुशोभित करने वाले, मॉरीशस से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में प्रतिनिधि प्रख्यात आर्य नेता श्री राजेन्द्रचन्द मोहित (राजन मोहित जी) का 30 जून, 2013 को निधन हो गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक–संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। –सम्पादक

खेद व्यक्त

खेद है कि साप्ताहिक आर्यसन्देश के गत अंक दिनांक 24 जून से 30 जून, 2013 में प्रिंटिंग प्रैस में खराबी के कारण पृष्ठ संख्या 6 पर कुछ सूचनाओं/समाचार के शीर्षक छपाई मे नहीं आ सका। पाठकों एवं सूचना प्रदाताओं को हुई असुविधा के लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है। – **सम्पादक**

आर्य साहित्य पुरस्कारों हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

आर्य समाज में अनुसंधान, लेखन, प्रकाशन व सम्पादन परम्परा और महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के सिद्धान्तों को प्रगती देने के उद्देश्य से गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (पंजी.) ने स्मृति शेष चौ. गुगनराम सिहाग, उनकी छोटी बहन स्मृति शेष गीना देवी व स्मृति शेष श्रीमती रज्जी देव नन्दाराम सिहाग की पावन स्मृति में तीन साहित्य पुरस्कार प्रारम्भ किये गये हैं। ये साहित्य पुरस्कार प्रत्येक वर्ष दिये जाते हैं। भारतवर्ष के प्रत्येक राज्य के तीन साहित्यकारों के लिए तीनों पुरस्कार अलग–अलग रूप से आरक्षित हैं। स्वर्गीय लेखक/साहित्यकार की प्रकाशित कृति को उनके पुत्र,पुत्री,पति, पत्नी व उत्तराधिकारी भी भेज सकते हैं।

इन पुरस्कारों के लिए कोई भी लेखक, सम्पादक, कवि, शोधकर्ता अपनी –अपनी पुस्तकें जो जनवरी 2006 से दिसम्बर 2013 तक के मध्य प्रकाशित हुई पुस्तकों की एक–एक प्रतियां लेखक के दो चित्र परिचय के साथ अपनी – अपनी प्रविष्ठियाँ व्यक्तिगत रूप से, कोरियर या रजिस्टर्ड डाक द्वारा 31 जनवरी 2014 तक सोसायटी के कार्यालय में भेजे जा सकते हैं। इसके लिए कोई प्रवेश शुल्क नहीं है। पुरस्कारों की कोई सीमा निश्चित नहीं हैं।

पता – सचिव, नरेश सिहाग बोहल एडवोकेट, गुगनराम सोसायटी भवन 202 पुराना हाउसिंग बोर्ड भिवानी – 127021 (भिवानी)

वार्षिक परीक्षा परिणाम

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

विद्यालय विभाग का वार्षिक परीक्षा परिणाम

1. विद्याधिकारी प्रथम – वर्ष	71/74	96 %
2. विद्याधिकारी द्वितीय – वर्ष	31/32	97 %
3. विद्याविनोद प्रथम – वर्ष	40/40	100 %
4. विद्याविनोद द्वितीय – वर्ष	17/18	94 %

विद्याधिकारी एवं विद्याविनोद प्रथम– वर्ष की प्रवेश तिथि 1 जुलाई से 29 जुलाई 2013 तक होगी – *जयप्रकाश विद्यालंकार, सहायक मुख्याध्ष्ठिाता*

वर चाहिए

कु. वाटिका सैनी (बी.ए.) सुपुत्री श्री ओमप्रकाश सैनी, जन्मतिथि 08.01.1977 कद 5′1′′, पूर्ण शाकाहारी एवं सुसंस्कारी युवती को सुयोग्य जीवन साथी चाहिए, सम्पर्क करें–

विकास सैनी (मो. 9811704445)

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। – सम्पादक

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज विकास नगर उत्तम नगर, नई दिल्ली–59

प्रधान : श्री दयानन्द त्यागी
मन्त्री : श्री राजकुमार आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री रघुवीर सिंह आर्य

आर्यसमाज ग्रीन पार्क नई दिल्ली–16

प्रधान : स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
मन्त्री : श्री वीरेन्द्र अरोड़ा
कोषाध्यक्ष : श्री प्रेमप्रकाश सब्बरवाल

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु. प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु. प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.	प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्य परिवारों का निर्माण - बहुत कुछ करना होगा

वर्तमान में आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन की आवश्यकता

- विनय आर्य

आज हम सभी इस बात से चिन्तित हैं कि नए आर्य परिवारों का निर्माण नहीं हो पा रहा, किन्तु किसी भी समस्या का निदान केवल चिन्ता करने ही से तो नहीं हो सकता। आज हजारों नहीं लाखों लोग सारे देश–विदेश में ऐसे मिल जाते हैं जो यह कहते हैं कि हमारे पिताजी आर्यसमजी थे, हमारी माताजी आर्यसमाजी थीं या हमारे दादाजी, नानाजी, बुआजी, चाचाजी आदि–आदि आर्यसमाजी थे। आखिर वह क्रम क्यों टूटा, कारण बहुत से रहे होंगे, लेकिन मेरे अनुभव में एक बड़ा कारण यह रहा – अनेक महानुभाव अपने बच्चों का विवाह करते समय यह ध्यान नहीं दे पाए कि समान विचारधारा के परिवारों में ही विवाह किया जाए। जाति देखी, गौत्र देखा, आय (इंकम) देखी, क्षेत्र देखा, कद–काठी–रंग–रूप देखा, किन्तु विचारधारा और खान–पान देखने में कहीं न कहीं चूक हुई। फलस्वरूप आर्य विचारधारा, आर्यसमाजी परिवेश में पली बेटी सनातन धर्म अथवा विपरीत विचारधारा में गई और उसी में ढल गई। विपरीत विचारधारा की बेटियां बहू बनकर आर्यसमाजी परिवारों में आई तो कुछ उदाहरणों को छोड़कर नया परिवार बहू के विचारों के साथ ही ढ़लता चला गया। **अन्य मत–मतान्तरों और आर्यसमाज में एक बहुत बड़ा मूल अन्तर है – वह यह है कि अन्य मतान्तरों में परम्पराओं का अन्धानुसरण होता है, जिसके कारण परिवार में आने वाला नया सदस्य, 'उसको मानना ही है' के आधार पर मान लेता है।** किन्तु आर्यसमाज में इस तरह का कट्टरपन या आर्यसमाजी परिवारों में इस प्रकार का कट्टरपन न होने से न्यूनता रह जाती है। विचार करने का समय और अवसर दोनों नहीं मिल पाते, जिससे पूर्व की चली आ रही परम्पराएं हावी हो जाती हैं और परिवार आर्यसमाज के मूल संगठन से अलग –सा होता चला जाता है। और फिर वह उसी श्रेणी में शामिल हो जाते हैं जो किसी आर्यसमाजी के मिलने पर यह कहते हैं कि मेरे पिताजी/दादाजी आर्यसमाजी थे।

आर्यसमाज के इतिहास में ऐसे अनेक परिवारों के उदाहरण हैं जिनकी चार पीढ़ियां निरन्तर आज भी आर्यसमाज से सक्रियता से जुड़ी हैं। 1890 में एक महानुभाव आर्यसमाज के साथ जुड़े। उनके चार पुत्र–पुत्री हुए। सभी आर्य समाज से गहराई से जुड़े, उन्होंने एक ही संकल्प लिया कि मैं अपने सभी बच्चों का विवाह आर्यसमाजी विचारधारा के परिवारों में ही करूंगा – और किया भी। परिणाम यह हुआ कि चार आर्यसमाजी परिवार हुए और उन चारों परिवारों ने भी यही संकल्प लिया और निभाया भी। इन आठ परिवारों के कुल मिलकर 22 पुत्र–पुत्री हुए। उसी संकल्प के चलते विवाह होने पर 22 के बाईस आर्य परिवार बनें। सम्भव है कि एक–दो परिवार उतने सक्रिय न हों लेकिन बाकी सारे देश में जहां पर भी हैं, पूर्ण सक्रिय हैं। इन 22 परिवारों के आज 55 पुत्र–पुत्रियां हैं। जिनमें से 13 बच्चों का विवाह हो चुका है, इनमें भी यह देखने का प्रयत्न तो किया गया कि आर्यसमाजी परिवार मिल जाए, परन्तु यह कार्य एक संकल्प के रूप में परिणत नहीं हो सका, जिसका परिणाम लगभग वही होने की सम्भावना है जो हम ऊपर लिख आए हैं। (आप कल्पना करें कि यदि उस समय आर्यसमाजी परिवारों की संख्या एक लाख होती तो आज स्थिति क्या होगी?)

इस परिवार के एक सदस्य से जब मैंने कारण पूछा तो जानकारी हुई कि वे चाहते तो थे किन्तु ऐसे परिवार ढूंढ़ने का कोई सशक्त माध्यम नहीं मिला। उन्हें आज भी आर्य परिवार युवक–युवती परिचय सम्मेलन होने की जानकारी ही नहीं थी। अब उन्होंने अपने एक बच्चे का पंजीकरण इस सम्मेलन के लिए कराया है।

अनेक परिवार हमें मिलते हैं जो यह कहते है कि कोई आर्य समाजी परिवार का अच्छा वर बताएं, अच्छी कन्या बताएं। किन्तु मैंने महसूस किया कि जब सम्मेलन में पंजीकरण में करने की बात मैं उनसे कहता हूं तो वे उसमें कुछ झिझकते हैं। कारण, बच्चे भी हो सकते हैं जो नहीं चाहते कि उनकी जानकारी अधिक सार्वजनिक की जाए। किन्तु अधिकतर मामलों में माता–पिता इसलिए नहीं पंजीकरण कराना चाहते, ताकि कहीं समाज में परिवार के सम्बन्ध में कोई गलत सन्देश न चला जाए। हमें इस विचार को कड़ाई से बदलना चाहिए और ज्यादा से ज्यादा आर्य परिवारों को अपने लिए अच्छे आर्यसमाजी परिवारों को ढूंढ़ना का अथक प्रयत्न करना चाहिए। इस सम्मेलन में अपने बच्चों का पंजीकरण करवाना भी उन्हीं प्रयत्नों में से एक है।

खैर इन सब परिस्थितियों और समस्याओं से प्रत्येक आर्यजन परिचित हैं और चिन्तित भी हैं। इन परिस्थितियों का समाधान यही है कि हम सब अपने परिवार के विवाह योग्य सभी बच्चों का पंजीकरण कराएं, जिससे हमको–आपको समान विचारधारा के आर्य परिवार मिल सकें।

लेख को ज्यादा बड़ा न करते हुए मैं सभी आर्यजनों से अपील करना चाहूंगा कि आप अपने परिवार से, अपनी आर्यसमाज के सदस्यों के परिवारों से, आपके क्षेत्र के जिस भी आर्य परिवार को जानते हैं उन्हें अपने बच्चों का पंजीकरण कराने के लिए अवश्य ही प्रेरित करें, ताकि एक विचारधारा के लोगों में विवाह होने से अच्छे परिवारों का निर्माण तो होगा ही साथ ही आर्यसमाज का संगठन भी विस्तृत एवं पुष्ट होगा।

– महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 –हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

5वां आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन

रविवार 14 जुलाई, 2013 प्रातः 10 बजे से

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-2, नई दिल्ली-110048

पंजीकरण फार्म डॉउनलोड करने के लिए लोगऑन करें
www.thearyasamaj.org

विशेष नोट : सम्मेलन स्थल पर भी तत्काल पंजीकरण की व्यवस्था होगी। तत्काल पंजीकरण वालों के नाम बाद में विवरणी पुस्तिका में सम्मिलित हो सकेंगे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का वैदिक प्रकाशन विभाग

प्रकाशित वैदिक साहित्य पर भारी छूट

अनु. साहित्य	मूल्य
1. सत्यार्थ प्रकाश 18 भाषाओं में (सीडी)	30/–
2. महर्षि दयानन्द के सम्पूर्ण ग्रन्थ (सीडी)	30/–
3. शेख चिल्ली और लाल बुजक्कड (सीडी)	30/–
4. पारिवारिक सुखशान्ति एवं समृद्धि के लिये यज्ञ करें (सीडी)	30/–
5. गुरुदेव दयानन्द (सीडी)	30/–
6. सत्य की राह (सीडी)	30/–
7. अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की 5 सी.डी. का सैट	100 /–
8. वैदिक विनय	150/–
9. गुरुदत्त विद्यार्थी – हिन्दी / अंग्रेजी	80/–
10. दयानन्द लघुग्रंथ सग्रंह	70/–
11. उपनिषदों की कहानियाँ	60/–
12. शगुन लिफाफा सिक्केवाला	400 /– सैंकड़ा
13. शगुन लिफाफा बिना सिक्केवाला	300 /– सैंकड़ा
13. नैतिक शिक्षा एवं व्यवहार कुशलता	200/–
14. नेम स्लिप (1×21)	10/–
15. समस्त कॉमिक्स	25 से 35/–
16. अनुपम दिनचर्या एवं गीताञ्जलि	50/–
17. वेद भाष्य (घूड़मल प्रकाशन)	5000/–
19. सत्यार्थ प्रकाश (अजिल्द)	40/–
सत्यार्थ प्रकाश (सजिल्द)	80/–
सत्यार्थ प्रकाश (स्थूलाक्षर)	150/–

सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य पर 20 % छूट।
अन्य प्रकाशनों के साहित्य पर 10% की छूट।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 01 जुलाई, 2013 से रविवार 07 जुलाई, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 5/ 6 जुलाई, 2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 3 जुलाई, 2013

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2012 दिल्ली के अवसर पर घोषित

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन–2013
डरबन (दक्षिण अफ्रीका)

28, 29, 30 नवम्बर एवं 1 दिसम्बर, 2013

विस्तृत सूचना एवं यात्रा विवरण आगामी अंकों में

प्रतिष्ठा में,
श्री......................

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का निर्वाचन सम्पन्न : श्री विजय सिंह भाटी सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित

राजस्थान हाईकोर्ट के आदेशानुसर नियुक्त चुनाव अधिकारी द्वारा हुए निर्वाचन में निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गए। चुनाव 7 जुलाई को होना था, किन्तु चूंकि निम्न पदाधिकारियों एवं इनके द्वारा समर्थित टीम के अतिरिक्त किसी भी पद के लिए दूसरा नाम नहीं आया अतः चुनाव अधिकारी ने **प्रधान के रूप में : श्री विजय सिंह भाटी, मन्त्री** के रूप में : **श्री अमर सिंह (अमरमुनि) एवं श्री सुधीर कुमार को कोषाध्यक्ष के रूप में** निर्विरोध निर्वाचित घोषित कर दिया। **सार्वदेशिक सभा प्रधान आचार्य बलदेव जी एवं मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी ने तथा दिल्ली सभा के प्रधान ब्र0 राजसिंह आर्य जी ने नव निर्वाचित अधिकारियों को अपनी शुभकामनाएं दी हैं।**

बाल (लघु) सत्यार्थ प्रकाश

वह सन्तान बड़ी भाग्यशाली है जिसके माता–पिता धार्मिक विद्वान् हों। अतः माता–पिता का सुयोग्य होना आवश्यक है। जो माता–पिता और आचार्य शिष्य को उचित शिक्षा व ताड़ना करते हैं वे मानो अपनी सन्तान एवं शिष्य को अपने हाथों अमृत पिला रहे हैं। इसके विपरीत जो लाड़न करते हैं वे विष पिलाकर उनका जीवन नष्ट कर रहे हैं।– ***महर्षि दयानन्द***

काश! सभी भारतीयो को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ होता तो आज स्वतन्त्र भारत के प्रशासक व नागरिक चरित्रवान होते और जघन्य पाप न होते। प्रत्येक का जीवन सुखी व सुरक्षित होता। सभी आर्यजनों से अनुरोध है कि अपनी सन्तानों हेतु दिल्ली आर्य प्रतिननिधि सभा द्वारा प्रकाशित एवं 'टंकाराश्री' अरुणा सतीजा द्वारा लिखित बाल (लघु) सत्यार्थ प्रकाश आज ही मंगवाएं। और अपनी सन्तानों को संस्कारवान बनाएं।

मूल्य मात्र 10/– रुपये। वितरण करने हेतु न्यूनतम 100 प्रति खरीदने पर 20% की विशेष छूट। प्राप्ति हेतु आज ही सम्पर्क करें–

वैदिक प्रकाशन,
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001
मो. 9540040339

माता कमला आर्या धर्मार्थ ट्रस्ट के सहयोग से सभा द्वारा प्रकाशित

वैदिक विनय

मात्र 125/– रुपये

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; टैलीफैक्स 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर